सरकारी महिला महाविद्यालय, बलांगीर , ओडिशा

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"हिन्दी साहित्य में विमर्श के स्वर"

दिनांक- 26 मार्च 2026

आयोजक

हिन्दी विभाग

संगोष्ठी के बारे में -

हिन्दी साहित्य का कालजयी इतिहास केवल शब्दों का संचयन नहीं, बल्कि समाज के बदलते स्वरूप और वैचारिक आंदोलनों का जीवंत दस्तावेज़ रहा है। आधुनिक काल में 'विमर्श' (DISCOURSE) की अवधारणा ने साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की है, जहाँ रचनाएँ केवल रसास्वादन तक सीमित न रहकर हाशिए पर खड़े समाज की सशक्त आवाज़ बनकर उभरी हैं। वर्तमान परिदृश्य में स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक और किन्नर जैसे अस्मितामूलक विमर्शों ने पारंपरिक साहित्यिक ढांचों को चुनौती देते हुए मानवीय संवेदनाओं और अधिकारों के नए आयाम स्थापित किए हैं। यह विमर्श ही है जिसने साहित्य को अधिक समावेशी और न्यायपरक बनाने का कार्य किया है।

इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य समकालीन हिन्दी साहित्य में उभरते इन विविध 'विमर्शों' के वैचारिक धरातल, उनकी ऐतिहासिक यात्रा और वर्तमान प्रासंगिकता पर सूक्ष्म चर्चा करना है। संगोष्ठी के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि किस प्रकार साहित्य ने पितृसत्ता, जातिवाद और औपनिवेशिक मानसिकता के विरुद्ध एक बौद्धिक संघर्ष छेड़ा है। साथ ही, यह मंच विद्वानों, शोधार्थियों और साहित्यकारों को एक ऐसा साझा अवसर प्रदान करेगा जहाँ वे विमर्श की सैद्धांतिकी और व्यवहारिकता के बीच के अंतर्संबंधों का विश्लेषण कर सकें।

संगोष्ठी के उद्देश्य –

- आदिवासी और अन्य वंचित वर्गों की विशिष्ट पहचान और उनके अस्तित्व के संघर्ष को साहित्य के माध्यम से रेखांकित करना।
- स्थापित मान्यताओं को चुनौती देते हुए इतिहास और परंपरा का पुनर्मूल्यांकन करना ताकि उपेक्षितों के योगदान को जगह मिल सके।
- समाज में गहराई से बैठी हुई पितृसत्तात्मक सोच और जातिगत भेदभाव का तार्किक विश्लेषण कर उसका प्रतिकार करना।
- दूसरों के द्वारा लिखी गई 'सहानुभूति' के बजाय स्वयं के जीवन अनुभवों (स्वानुभूति) पर आधारित लेखन को प्रोत्साहित और स्थापित करना।
- साहित्य के पारंपरिक पैमानों को बदलकर श्रम, संघर्ष और यथार्थ पर आधारित एक नया 'विमर्शवादी सौंदर्यशास्त्र' विकसित करना।
- साहित्य को सामाजिक अन्याय और शोषण के विरुद्ध एक वैचारिक हथियार और प्रतिरोध के माध्यम के रूप में सशक्त बनाना।
- समाज के मुख्यधारा के पाठकों में हाशिए के समाज की समस्याओं के प्रति गहरी मानवीय संवेदना और समझ विकसित करना।
- साहित्य में समानता, न्याय और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देकर एक समावेशी समाज की परिकल्पना को साकार करना।

महाविद्यालय के बारे में -:

सरकारी महिला महाविद्यालय, बलांगीर, 1962 में स्थापित हुआ था। यह ओडिशा में महिलाओं की शिक्षा के लिए एक पूरे ओडिशा में एक प्रतिष्ठित संस्थान है। पश्चिम ओडिशा के एक अनुसूचित और आर्थिक रूप से पिछड़े इलाके में स्थापित यह महाविद्यालय कला और विज्ञान में 18 स्नातक और 3 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित करता है । 2024-25 शिक्षा वर्ष से नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (NEP) 2020 के लागू होने के साथ, इसका उद्देश्य समावेश शिक्षण, बहु-विषयक शिक्षा के साथ अनुसंधान और शोध को महत्व देना। यह संस्थान ऊंची शिक्षा के साथ छात्राओं को समाज में उत्कृष्ट स्थान प्रदान करना और सर्व समाज की महिलाओं को सामाजिक दृष्टिकोण से सुदृढ़ करने के लिए एक प्रतिबद्ध संस्थान है।

हिन्दी विभाग के बारे में –

हिन्दी विभाग सरकारी महिला महाविद्यालय बलांगीर का एक प्रमुख विभाग है, छात्रों में आलोचनात्मक सोच और रचनात्मक अभिव्यक्ति विकसित करने के लिए 2023 में हिन्दी विभाग की स्थापना हुई । हिन्दी विभाग में स्नातक पाठ्यक्रम के लिए 32 सीट उपलब्ध है । हिन्दी विभाग का उद्देश्य हिन्दी भाषा और साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण करना और वैश्विक स्तर पर हिन्दी की पहचान को सुदृढ़ बनाना है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हर साल 14 सितंबर को विभाग में हिंदी दिवस मनाया जाता है । हमारे पाठ्यक्रम में प्राचीन साहित्य के साथ-साथ समकालीन विधाओं जैसे 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' और 'डिजिटल मीडिया' को भी शामिल किया गया है, ताकि छात्र आधुनिक जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार हो सकें।

संगोष्ठी का विषय -

- हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श
- हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श
- हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श
- हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श
- हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श
- हिन्दी साहित्य में विकलांग विमर्श
- हिन्दी साहित्य में मजदुर विमर्श

शोध पत्र के लिए आमंत्रण

हम इस संगोष्ठी (सेमिनार) के मुख्य विषय एवं उप-विषयों पर मौलिक शोध पत्र प्रस्तुत करने हेतु शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों और प्रोफेशनल्स को आमंत्रित करते हैं। विशेष रूप से, इन क्षेत्रों के विद्यार्थियों को इस शैक्षणिक चर्चा में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

सारांश और पूर्ण शोध-पत्र जमा करने के दिशा निर्देश –

लेखकों से निवेदन है कि वे अपने संक्षिप्त (सारांश) MS Word फ़ाइल के रूप में जमा करें, जिसकी शब्द सीमा अधिकतम 250 निर्धारित है। संक्षिप्त और पूर्ण शोध-पत्र दोनों ही 'टाइम्स न्यू रोमन' फ़ॉन्ट ,12 फ़ॉन्ट साइज़, 1.5 लाइन स्पेस और सामान्य मार्जिन के साथ फ़ॉर्मेट किए होने चाहिए। पूर्ण शोध-पत्र की शब्द सीमा 3,000 से 5,000 के बीच होनी चाहिए और इसमें संदर्भ के लिए APA (7वें संस्करण) या MLA (9वें संस्करण) शैली का पालन करना अनिवार्य है। चयनित लेखों को एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा ISBN नंबर युक्त संपादित पुस्तक में प्रकाशित किया जाएगा। ध्यान दें कि प्रकाशक की नीतियों के अनुसार, पूर्व सूचना के आधार पर प्रकाशन हेतु अतिरिक्त शुल्क लिया जा सकता है। कृपया अपने संक्षिप्त और पूर्ण शोध-पत्र ईमेल आईडी hindideptgwc@gmail.com पर प्रेषित करें ।

महत्वपूर्ण दिनांक :-

सारांश जमा करने की अंतिम तिथि	19 मार्च 2026
पूर्ण शोधपत्र जमा करने की अंतिम तिथि	23 मार्च 2026
पंजीकरण की अंतिम तिथि	22 मार्च 2026

पंजीकरण शुल्क -:

	विद्यार्थी/शोधकर्ता	शिक्षक/ कॉर्पोरेट
सहभागिता	रु.200	रु.300
प्रस्तुतिकरण	रु.300	रु.400

बैंक खाते का विवरण

खाताधारक का नाम	**AJIT KUMAR PANDA**
खाता संख्या	**7063561441**
बैंक नाम और आईएफएससी	**इंडियन बैंक , IDIB000B850**
शाखा	**इंडियन बैंक,बलांगीर**

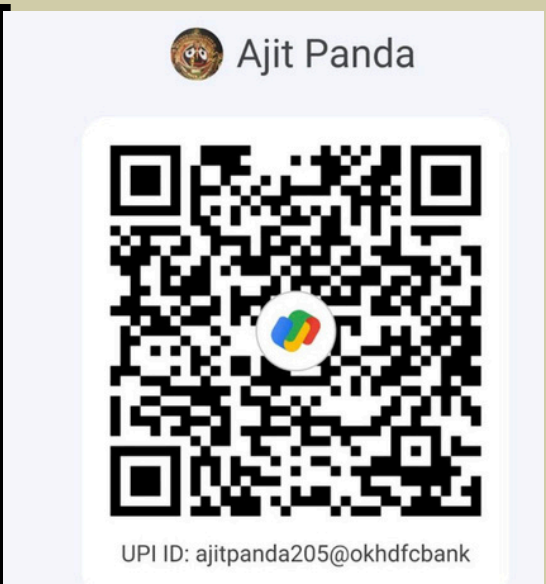

सूचना

- कोई यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता (TA/DA) देय नहीं होगा।
- आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं कराई जाएगी। हालांकि, प्रतिभागी निकटवर्ती होटलों में आवास व्यवस्था हेतु आयोजकों से संपर्क कर सकते हैं।
- पंजीकरण शुल्क में केवल अल्पाहार (नाश्ता), भोजन और संगोष्ठी किट (SEMINAR KIT) सम्मिलित हैं।

आयोजक

मुख्य संरक्षक

डॉ. अरविंद कुमार ओझा
प्रधानाचार्य, सरकारी महिला महाविद्यालय, बलांगीर

संरक्षक

श्री विभूति भूषण साहु
आईक्यूएसी संयोजक और
अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष
सरकारी महिला महाविद्यालय, बलांगीर

संयोजक

श्री अजित कुमार पंडा
संस्कृत अध्यापक और हिंदी विभागाध्यक्ष
सरकारी महिला महाविद्यालय, बलांगीर

श्री प्रभंजन मिश्र
हिन्दी अध्यापक

श्री उत्तम भोइ
हिन्दी अध्यापक

सुश्री उर्मिला मटारी
हिन्दी अध्यापिका

सलाहकार समिति

डॉ. छबिल कुमार मेहेर , उप निर्देशक , भारत सरकार, गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग
डॉ जयंत कर शर्मा (सेवानिवृत प्राध्यापक), पूर्व कुलसचिव ,ओएसओयू सम्बलपुर,
डॉ विजय कुमार बेहेरा ,सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष , हिंदी (बलांगीर डिग्री कॉलेज)
डॉ रूपधर गोमांगो ,सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,हिंदी (राजेंद्र विश्वविद्यालय)
श्री देवदास खटाई , सहायक प्राध्यापक , हिन्दी
डॉ कुमार संभव चोपदार, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष , प्राणीविज्ञान

आयोजक समिति

डॉ. राजेश कुमार कर्ण, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान
डॉ. सिद्धेश्वर पधान, सहायक प्राध्यापक, इतिहास
सुश्री प्रतीक्षा प्रतिश्रुति, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा
डॉ. भुवन मोहन पंडा , सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान
डॉ. भुवनेश्वर छत्रिया, सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र
श्रीमती संयुक्ता कुमारी नायक, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र
श्री सरोज कुमार जगदला, सहायक प्राध्यापक, ओड़िया
श्री रति कांत नायक, सहायक प्राध्यापक, ओड़िया
श्रीमती रंथि तिर्की, अध्यापक, मनोविज्ञान
श्री राकेश मल्लिक, अध्यापक, दर्शनशास्त्र
श्री आदर्श कुमार महापात्र, अध्यापक , संस्कृत
श्री सिद्धार्थ दाश, अध्यापक,पत्रकारिता
श्री दिनेश कुमार सिंह, अध्यापक, इतिहास
श्री देवदत्त पाणिग्राही अध्यापक,राजनीति शास्त्र
डॉ मिनती देवता, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास

संपर्क

श्री अजित कुमार पंडा-81442 55279
श्री प्रभंजन मिश्र-6370949415
श्री उत्तम भोइ -8260530689
सुश्री उर्मिला मटारी-7894777448

Editor
Department of Journalism and mass communication